

हनुमान चालीसा हिंदी में — संपूर्ण पाठ, PDF और ऑडियो

Hanuman Chalisa | Hindi / हिन्दी

New reading edition - 23 October 2026. Prayer reading in the selected script, followed by a thematic meaning guide. The guide is not a full verse-by-verse translation. AI-assisted text preparation; professional native-language review pending. This PDF is newly typeset, not an archive recovery.

Read online: <https://hanumanchalisa-lyrics.online/श्री-हनुमान-चालीसा-hanuman-chalisa/>

Original prayer / script reading

Opening dohas

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

Forty chaupais

1. जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।

2. रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

3. महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।

4. कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।

5. हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।।

6. संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।

7. विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।

8. प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
9. सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
10. भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्र के काज संवारे।।
11. लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
12. रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
13. सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
14. सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
15. जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।
16. तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
17. तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
18. जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
19. प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।
20. दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
21. राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
22. सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डर ना।।
23. आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै।।
24. भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
25. नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

26. संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
27. सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
28. और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
29. चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
30. साधु-संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
31. अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
32. राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
33. तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै।।
34. अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।
35. और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।
36. संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
37. जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाई।।
38. जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
39. जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
40. तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

Closing doha

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

Meaning / study guide

MEANING & READING GUIDE

हनुमान चालीसा: पाठ और अर्थ

इस पृष्ठ पर मूल प्रार्थना का पाठ और उसके विषयों की संक्षिप्त व्याख्या दी गई है। लिप्यंतरण (transliteration) में शब्दों को लिखने की लिपि बदल दी जाती है, जबकि अनुवाद में उनके अर्थ को समझाया जाता है। ये अध्ययन के लिए अलग-अलग साधन हैं।

प्रारंभिक प्रार्थना

इसमें प्रार्थना करने वाला अपने गुरु को याद करता है, राम की स्तुति के लिए अपना मन तैयार करता है, और हनुमान से शक्ति, बुद्धि तथा स्पष्ट समझ की प्रार्थना करता है। शुरुआत में विनम्रता का भाव है, न कि स्वयं के ज्ञान का कोई दावा।

बुद्धि, साहस और सेवा

शुरुआती छंदों में हनुमान को बुद्धि और उत्तम गुणों के स्रोत, राम के दूत और एक समर्पित सेवक के रूप में सराहा गया है। यहाँ शक्ति के साथ-साथ सही निर्णय लेने की क्षमता, ज्ञान और दूसरों की मदद करने की तत्परता का भी उल्लेख है।

रामायण में हनुमान

इस प्रार्थना में सीता की खोज, लंका पार करने और लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी लाने जैसी घटनाओं को याद किया गया है। राम, हनुमान की सेवा की प्रशंसा करते हैं। इन छंदों में सुग्रीव और विभीषण की मदद करने का भी जिक्र है। ये प्रसंग कार्यों के माध्यम से भक्ति को दर्शाते हैं।

विश्वास और स्मरण

बीच के छंदों में भक्त हनुमान की शरण लेता है, कठिन समय में उन्हें याद करता है और उन्हें अपने रक्षक के रूप में देखता है। भय, कष्ट और बाधाओं को दूर करने संबंधी बातें प्रार्थना की भक्तिपूर्ण भाषा का हिस्सा हैं; इन्हें कोई चिकित्सीय सलाह या किसी निश्चित परिणाम की गारंटी नहीं माना जाना चाहिए।

राम के प्रति भक्ति

बाद के छंदों में हनुमान के प्रति भक्ति को राम के स्मरण से जोड़ा गया है। प्रार्थना करने वाला सहायता, कृपा और सेवा के प्रति समर्पित हृदय की याचना करता है। अंतिम छंदों में तुलसीदास जी प्रभु के सेवक बने रहने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं।

समापन प्रार्थना

अंतिम दोहे में हनुमान से प्रार्थना की गई है कि वे राम, लक्ष्मण और सीता के साथ भक्त के हृदय में निवास करें। इस प्रकार, स्मरण और भक्ति के साथ प्रार्थना पूर्ण होती है।

इस पृष्ठ का उपयोग कैसे करें

सबसे पहले शुरुआती दोहे पढ़ें, फिर क्रम से चालीस मुख्य छंदों को पढ़ें, और अंत में समापन दोहा पढ़ें। एक बार में कुछ पंक्तियाँ ही पढ़ें। जो शब्द समझ न आएँ, उन्हें हिंदी पाठ और किसी विश्वसनीय पाठ (recitation) से मिलाकर देखें। अलग-अलग संस्करणों में शब्दों की वर्तनी (spelling) में अंतर हो सकता है। विभिन्न संस्करणों की तुलना करने के लिए भाषा संबंधी लिंक का उपयोग करें।

डाउनलोड और ऑडियो

केवल सुरक्षित और सही ढंग से काम करने वाली फ़ाइलों को ही 'मूल PDF डाउनलोड' के रूप में चिह्नित किया गया है। यदि आपकी भाषा के लिए कोई मूल PDF उपलब्ध नहीं है, तो अपने ब्राउज़र के 'प्रिंट' (Print) विकल्प का उपयोग करें और पढ़ने के लिए एक प्रति (copy) 'PDF के रूप में सेव' (Save as PDF) कर लें। उपलब्ध ऑडियो मूल प्रार्थना का पाठ है, न कि हर भाषा में किया गया अनुवाद।

अनुवाद संबंधी टिप्पणी

यह प्रार्थना के विषयों की एक संक्षिप्त और मशीन की सहायता से तैयार की गई व्याख्या है; इसे कोई पूर्ण विद्वतापूर्ण टीका या शब्द-दर-शब्द अनुवाद न मानें। हाल ही में तैयार किए गए रूपांतर, पारंपरिक मुद्रित संस्करणों से भिन्न हो सकते हैं। यदि आपको किसी पाठ या अनुवाद में कोई त्रुटि मिलती है, तो कृपया 'हमसे संपर्क करें' (Contact Us) पृष्ठ के माध्यम से, एक विश्वसनीय संदर्भ के साथ इसकी जानकारी दें।

Machine-assisted summary of the prayer's themes, not a verse-by-verse scholarly translation. Please report a correction with a trusted reference.

Text, translation and edition notes

Traditional devotional prayer. Hanuman Chalisa is traditionally attributed to Goswami Tulsidas. Bajrang Baan is commonly attributed to him, but historical authorship is not established by this edition. Spellings and stanza order can vary. Newly prepared readings and meanings may need correction. Devotional promises are part of the prayer, not medical guarantees. Translation and typesetting: Hanuman Chalisa Lyrics editorial preparation with AI assistance; no claim of professional translator certification.

Text reference: <https://share.chinmayamission.com/docs/Hanuman-Chalisa-CMM15.pdf>

Corrections: info@hanumanchalisa-lyrics.online | <https://hanumanchalisa-lyrics.online/contact-us/>